मिली बग – कपास की फसल पर उभरता खतरा

वी.के.कालड़ा
वरिष्ठ विस्तार विशेषज्ञ (कीट विज्ञान)
चौ0 चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार–125004

मैकोनेलिकोक्कस हिसूटस नामक मिली बग विश्व के अधिकतर उष्णकटिबद्ध क्षेत्रों में पाया जाता है जिनमें एशिया, मध्यपूर्वी देश अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि शामिल हैं। इन क्षेत्रों में यह कीट विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों पर आर्थिक रूप से हानि पहुँचाता है। हरियाणा प्रदेश में यह कीट 2005–06 के खरीफ मौसम से विभिन्न फसलों, विशेषकर कपास पर हानि करते पाया गया था। परन्तु खरीफ 2007 में इसका प्रकोप अत्यधिक मात्रा में देखा गया है। यद्यपि आरम्भ में यह कीट फतेहाबाद व सिरसा जिलों में मुख्यतः कपास की फसलों पर हानि पहुँचाता देखा गया था, परन्तु धीरे–धीरे अब यह सारे प्रदेश में फैल गया है। इसलिए यदि इसे समय रहते प्रभावी ढंग से नियन्त्रित नहीं किया गया तो इसका प्रकोप एक महामारी का रूप धारण कर सकता है। इस कीट के नियन्त्रण के लिए निम्नलिखित जानकारी आवश्यक है :–

जीवनचक्र

मिली बग एक छोटा, अण्डाकार, लगभग 0.5 सैं.मी. लम्बा कीट होता है जिसका शरीर सफेद रंग के कपास जैसे मोमिया पदार्थ से ढ़का होता है। इस कीट की मादा व शिशु पंखहीन होते हैं और इन्हीं अवस्थाओं में यह कीट फसलों को हानि पहुँचाता है। इसका नर प्रौढ़ पंखों वाला होता है और यह फसलों को कोई हानि नहीं पहुँचाता। अधिक सर्दी का समय यह कीट अण्डों की अवस्था में काटता है जो प्रायः पौधों के तने पर, मिट्टी में, तने पर झिरियों आदि में व मुड़े–तुड़े पत्तों में पाये जाते हैं।

हानि करने का तरीका

इस कीट के शिशु व मादा प्रौढ़ पौधों का रस चूसते हैं और साथ ही साथ एक प्रकार का विष पौधों में छोड़ते रहते हैं जिससे पत्ते पहले तो मुड़ने लगते हैं और फिर सूख जाते हैं। इनके साथ–साथ यह कीट एक प्रकार का मीठा रस स्राव भी करता रहता है जिसपर काली फफूँद पैदा हो जाती है और पौधे सामान्य प्रकाश संश्लेषण करने में समर्थ हो जाते हैं।

एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए

यह मिली बग एक स्थान से दूसरे स्थान तक फैलने के लिए प्रायः वायु की सहायता लेता है। ऐसा भी देखा गया है कि मनुष्यों के कपड़ों से चिपककर और जानवरों आदि के बालों में फंस कर भी यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच जाते हैं। प्रायः ऐसा देखा गया है कि यह कीट एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में बहुत तेजी से फैलता है।

आक्रमण के लक्षण

इस कीट से ग्रसित पौधों के पत्ते प्रायः सिकुड़े हुए दिखाई देते हैं व पत्ते मुरझाने लगते हैं और ऐसी स्थिति कोमल शाखाओं पर भी देखी जाती है। इसके अतिरिक्त पत्तियां भली–भांति खुल नहीं पातीं और गुच्छानुमा, झाड़ीनुमा दिखाई देती हैं। पौधे की कलियों व तनों पर सफेद मोमिया पाऊडर जैसा इकट्ठा हो जाता है और बाद में मीठे रस स्राव के कारण काली फफूंद फूलों को खिलने नहीं देती और जो अक्सर सिकुड़ कर मर जाते हैं। ऐसे फूलों से बने फल/टिण्डे प्रायः छोटे रह जाते हैं और आकार में बेढंगे हो जाते हैं।

यह कीट लगभग 200 से अधिक प्रकार के पौधों को हानि पहुँचाता है। आरम्भ में यह कीट प्रायः खाली/बंजर खेतों में बाड़ व अन्य प्रकार के पौधों के आसपास डोलों, खालों के साथ–साथ खरपतवारों पर पनपता है। इस कीट का प्रकोप कांग्रेस/गाजर घास (पार्थेनियम), सांठी, भाखड़ी, गुडल, लेंटाना, बूई आदि पर अत्यधिक पाया गया है।

प्रबन्धन

यह एक बहुभक्षी कीट है, इसकी संख्या बहुत तेजी से बढ़ती है और यह एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में बहुत आसानी से व तेजी से फैलता रहता है। इसलिए इस कीट का पूर्ण प्रबन्धन आसान नहीं है। किसानों को इस कीट के प्रबन्धन के लिए लम्बे समय तक प्रयास करने होंगे। इसलिए हमें समन्वित कीट प्रबन्धन सामूहिक रूप से करना होगा जिससे कि इस कीट की संख्या बहुत कम स्तर पर रख पायें। समन्वित प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिएँ –

1. कपास के खेतों में व आसपास हर प्रकार के खरपतवारों को, विशेषकर ऊपरलिखित खरपतवारों को नियमित रूप से नष्ट करते रहे ताकि मिली बग इन पर पनप न पाये और न ही हमारी मुख्य फसल कपास पर स्थानान्तरित हो सके। ऐसे खरपतवारों को काटकर जलाना अधिक फायदेमंद साबित होगा।
2. जिन पौधों और शाखाओं पर इस कीट का अधिक प्रकोप देखा जाए उन्हें काटकर तुरन्त जला देना चाहिए।
3. मिली बग कीट का प्रकोप फसल या खरपतवार पर दिखाई दे तो निम्नलिखित में से किसी एक कीटनाशक का छिड़काव करने का प्रबन्ध करें :–

   कार्बेरिल (सेविन 50 डब्ल्यू.पी.) 800 ग्राम, थायोडीकार्ब (लारविन 75 डब्ल्यू.पी.) 250 ग्राम, क्विनलफॉस (एकालक्स 25 ई.सी.) 800 मि.ली., प्रोफेनोफॉस (प्रोफेक्स या कुराक्रोन या सेलक्रोन 50 ई.सी.) 750 मि.ली., मिथाईल पैराथियान (मेटासिड 50 ई.सी.) 500 मि.ली. प्रति एकड़
4. चूंकि यह कीट अपने अण्डे एक थैलीनुमा भाग में देता है और उसे अपने शरीर के नीचे ही लगाए रहता है और अण्डों में से शिशु भी इसी थैली में ही निकल जाते हैं, इसलिए पहले छिड़काव से ऐसे शिशु जो थैली में ही रह गए हों उनका नियन्त्रण नहीं

हो पाता। अतः 5–6 दिन के बाद ऐसे नये जन्मे शिशुओं का नियन्त्रण करने के लिए छिड़काव को दोहराएँ।

5. यदि खरपतवारों को नष्ट करना सम्भव न हो पाये तो ऊपरलिखित कीटनाशकों में से किसी एक का इन पर भी छिड़काव करें।

6. चूंकि यह कीट बहुत तेजी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचने में सक्षम हैं, अतः इनके प्रबन्धन के लिए सामूहिक तौर पर उठाये गए कदम ही अधिक कारगर सिद्ध होंगे।

7. किसी भी प्रकार के उचित मार्गदर्शन के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कपास विभाग के वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग, हरियाणा सरकार के अधिकारियों से सम्पर्क करें।